महर्षि –प्रभा

मासिक ई–पत्रिका

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालय

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

अंक–२
माह –सितम्बर
वर्ष २०२१
विक्रमी संवत २०७८

वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ।।

mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

ई-मेल - maharishiprabhamvsu@gmail.com

संरक्षक-
श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)
श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)
श्री कंवरपाल गुर्जर
(माननीय शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक-
प्रो. बृजकिशोर कुठियाल
(अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद्, हरियाणा)
प्रो. राजकुमार मित्तल
(कुलपति)

प्रधान सम्पादक-
प्रो. यशवीर सिंह
(कुलसचिव)

सम्पादक-
डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय

सहसम्पादक-
डॉ. नरेश शर्मा
डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. शशिकान्त तिवारी
डॉ. शर्मिला

छात्र सम्पादक
रजनी
शीतल

हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद
Haryana State Higher Education Council

प्रो० बृज किशोर कुठियाला
अध्यक्ष

क्रमांक CL/HSHEC/57 दिनांक 20/07/2021

संदेश

संस्कृत वाङ्मय ज्ञान एवं विज्ञान का निधान है। जब दुनिया के अधिकतम लोग अव्यवस्थित तरह अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे उस काल में हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि अपनी अलौकिक दिव्य दृष्टि के बल पर पूरे ब्रह्माण्ड के गहन अध्ययन के साथ ग्रह-नक्षत्र, जीवात्मा-परमात्मा, सत्य- असत्य, कर्त्तव्य- अकर्तव्य जड़ चेतन आदि सृष्टि के समस्त अवयवों का अतिगहन एवं वैज्ञानिक विश्लेषण कर रहे थे। संसार के प्राणियों के दुःख से द्रवित होकर वेद, ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तु, दर्शन, आदि अनेक विद्याओं एवं ग्रन्थों का उपदेश किया जिससे सबके कष्ट की निवृति हो सके। संस्कृत ग्रन्थों में सन्निहित ज्ञान-विज्ञान को वर्तमान परिप्रेक्ष्य के आधार पर अनुसंधान कर समाज के बीच लाने का प्रयास होना चाहिए। भारतीय ज्ञान धारा का अनन्त प्रवाह संस्कृत ग्रन्थों में है। उसे वैश्विक परिदृश्य के आधार पर स्थापित करने की आवश्यकता है।

किसी समस्या या जिज्ञासा का समाधान ही अनुसंधान का मूल उद्देश्य होता है। संसार को देखकर उनके मन में अनेक प्रकार की जिज्ञासायें जागृत हुई, साथ ही अनेक समस्यायें भी उपलब्ध हुई, उन सबके समाधान के लिए ही संस्कृत में उन विद्याओं एवं ग्रन्थों का प्रणयन हुआ यह सर्वविदित है। यह सर्वप्रमाणित है कि आज भी जितनी समस्यायें या जिज्ञासाएं हैं उनका समाधान संस्कृत ग्रन्थों में है। हमें अनुसंधान के द्वारा उन्हें बाहर लाने की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि विश्वविद्यालय के अनेक विद्वान् इस दिशा में प्रयासरत होंगे।

संस्कृत विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान-विज्ञान की परम्परा के आधार पर नवाचार की असीम संभावना हो सकती है। वैश्वीकरण के मौजूदा दौर की संचार प्रक्रिया संस्कृत दे सकता हैं। केवल संस्कृत में ही उन सभी रसों और भावों की चर्चा है जो एक वैश्विक संचार प्रक्रिया के लिए आवश्यक हैं। पश्चिम की संचार प्रक्रियाएं एकांतिक हैं और वे मनुष्य के सभी पहलुओं का समावेश नहीं करती। जबकि भारत में विविधताओं के कारण संचार की बहुमुखी प्रक्रिया का विकास हुआ था। इस दिशा में महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय भी क्रियाशील होगा, ऐसा विश्वास है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका भी उसका एक माध्यम बन सकता है।

मुझे प्रसन्नता है कि महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल ने मासिक ई-पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया है। पत्रिका विश्वविद्यालय की गतिविधियों को समाज के बीच ले जाने का सशक्त साधन के साथ शिक्षकों एवं छात्रों की प्रतिभा को भी प्रकट करने का माध्यम है। मासिक ई-पत्रिका के प्रकाशन के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचिव, संपादक एवं संपादक मंडल के सभी सदस्य को साधुवाद। पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल हो, ऐसी मेरी शुभकामना हैं।

जयतु भारतं जयतु संस्कृतम्

प्रो. बृज किशोर कुठियाला
अध्यक्ष
हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद्

तकनीकी शिक्षा सदन, सैक्टर 4, पंचकूला (हरियाणा) - 134109
सपर्क सूत्र : 0172-2570743, chairpersonhshec@gmail.com

सम्पादकीयम्

वयं जानीमः यत् संस्कृतभाषा केवलं भाषामात्रमेव नास्ति। संस्कृतं भारतस्यात्मा भारतीयसंस्कृतेः आधारभूतञ्च वर्तते। संस्कृतभाषायां निगदितं ज्ञान-विज्ञानं न केवलं भारतस्य कृते अस्ति अपितु समग्रे भूमण्डले तस्य उपयोगिता सर्वविदिताअस्ति। तज्ज्ञानं सार्वकालिकं सार्वभौमिकं च अस्ति। प्राणिमात्रस्य कल्याणभूतं ज्ञान-विज्ञानं वर्तमानसन्दर्भे कथं समाजोपयोगि भवितुमर्हति, एतस्य कृते विश्वविद्यालयानां महती उपयोगिता भवति। महर्षि-वाल्मीकि-संस्कृत-विश्वविद्यालयः भारतीयज्ञानपरम्परायाः संरक्षणं तु करोत्येव सहैव संस्कृतग्रन्थेषु निगदितं ज्ञान-विज्ञानं वर्तमानसन्दर्भे कथं समाजाय उपयोगि भवितुमर्हति एतस्य कृते अपि प्रयासरतो वर्तते।

भारतीयज्ञानसंदर्भे अर्थशास्त्रं, भूगोलं, इतिहासः, संगणकविज्ञानं, ज्योतिषं, आयुर्वेदः, वास्तुशास्त्रं, दर्शनशास्त्रमित्यादि विषयेषु अपि पठनं भवति। एते विषयाः भारतीयग्रन्थेषु कथं समाहिताः सन्ति एतेषां वर्तमानसमये कीदृशी उपयोगिता भवितुमर्हति इत्यपि बोधयति।

कौटिल्यस्य अर्थशास्त्रं न केवल अर्थशास्त्रविषयको ग्रन्थोऽस्ति अपितु अस्मिन् ग्रन्थे राजनीति-अर्थनीति-समाजनीति-सैन्यनीति-राष्ट्रनीति-आदि अनेकेषां विषयाणां समायोजनम् अस्ति। आधुनिकसंगणकविषये विशेषज्ञानां कथनमस्ति मत् भविष्ये संगणक--मन्त्रस्य कृते सर्वोत्तमा भाषा संस्कृतभाषा एव अस्ति। अधुना विदेषेष्वपि संस्कृतं प्रति महती रुचिः जागृता वर्तते। अमेरिका-जर्मन-आदि देशेषु एतस्याः वैज्ञानिकताविषये शोधकार्यमपि आरभ्येत।

अमेरिकादेशे तु "वाक् चिकित्सा" इत्यस्य कृते संस्कृतभाषायाः प्रयोगः क्रियते। तेषां मन्तव्यमस्ति यत् संस्कृतभाषायाः उच्चारणेन "वाक् शुद्धिः" भवति। वाचि माधुर्यम् आयाति। संस्कृतं संस्कारस्य भाषा अस्ति। मानवमात्रस्य कल्याणाय यदि कुत्रापि प्रार्थना क्रियते तत् संस्कृतंभाषा एव अस्ति।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तुः मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

असौ मन्त्रः सर्वेषां जिह्वाग्रे स्थितो वर्तते। अतः वयं कथयामः यत् संस्कृतं पठित्वा मानव-कल्याणाय सन्नद्धाः भवामः। भारतीयसंस्कृतेः आधारभूता इयम् भाषा अस्माभिः रक्षणीया पठनीया तथा च जीवने संधारणीया॥

सम्पादकः

शुभकामनाः

हरियाणाराज्ये प्रथमो महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः स्वकीयं लक्ष्यं प्रति निरन्तरम् अग्रे वर्धमानो वर्तते इति महान् प्रमोदः। राज्यस्य यशस्वी मुख्यमन्त्रिमहोदयः राज्ये वेद-उपनिषद्-रामायण-महाभारत-पुराण-व्याकरण-ज्योतिष-धर्मशास्त्र-साहित्य-दर्शन-संस्कृतपत्रकारिता-आयुर्वेद-योग-हिन्दू अध्ययन-जीवनप्रबन्धन-कर्मकाण्डप्रभृतिक्षेत्रे प्रायोगिकम् अध्ययनम् अनुसन्धानं समाजोपयोगाय वृत्तिपरकञ्च भवेदिति सङ्कल्प्य संस्कृतविश्वविद्यालयस्य स्थापनां कृतवान्।

तदनुसारं विश्वविद्यालये दशविषये, शास्त्री-आचार्यकक्षा समारब्धा पञ्चदशाधिकेषु विषयेषु प्रमाणपत्र- परीक्षा समारब्धा। इति श्रावं श्रावं सानन्दं शुभकामनां प्रेषयन् अत्र प्रगतिपथे सामोदम् अग्रेसरं कुलगुरुपदमलङ्कुर्वाणं श्रीमन्तं प्रो आर के मित्तल महोदयम् अभिनन्द्य सर्वान् सुयोग्यान् आचार्यान् अधिकारिणः छात्रांश्च कृते शुभाशीर्वचांसि प्रेषयन् प्रसीदामि। विश्वविद्यालयस्य महर्षिप्रभा ई पत्रिकायाः प्रकाशनम् अतीवमहत्त्वपूर्णं कार्यमस्ति। पत्रिकायाः सम्पादकाय सम्पादकमण्डलाय च साधुवादं यच्छन् ई पत्रिकायाः निर्वाधरूपेण गुणवत्तापूर्णं प्रकाशनं भवेदिति परमात्मानं सम्प्रार्थ्य विरमामि।

डॉ श्रेयांश द्विवेदी
पूर्वः कुलपतिः
महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालयः

24/08/2021 को महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालय की प्रथम ई-मासिकी पत्रिका ***"महर्षि प्रभा"*** का विमोचन विश्वविद्यालय के (दाएं से) **कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल, कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह, सह आचार्य डॉ. जगतनारायण कौशिक** व **सहायक आचार्य डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय** द्वारा किया गया।

शिक्षक दिवस

जीवन की पाठशाला का प्रथम गुरु माँ है - जगराम

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में ऑनलाइन माध्यम से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में श्री जगराम जी (क्षेत्रीय संगठन मंत्री- शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास) उपस्थित रहे। आरम्भ में वैदिक एवं लौकिक मंगलाचरण क्रमशः डॉ. नवीन शर्मा एवं डॉ. रामानन्द मिश्र द्वारा तथा डॉ. कृष्ण चंद्र पांडेय द्वारा मुख्य अतिथि का स्वागत किया गया। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल जी की अध्यक्षता में कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। तदुपरांत मुख्य वक्ता ने अपना वक्तव्य में कहा कि जीवन की पाठशाला का प्रथम आदर्श गुरु मां होती है। शिक्षक को मां के समान होना चाहिए।

शिक्षक का अर्थ है शि - शिखर तक ले जाने वाला, क्ष- क्षमा करने वाला और क- कमी को दूर करने वाला। जो गुरु दूसरों को प्रकाश देने वाला होता है वही वास्तविक गुरु होता है। कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय कुलपति जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं देते हुए सभी का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ शिक्षक अनेक भावी शिक्षकों का निर्माण करते हैं जो राष्ट्रहितक में कार्य करते हैं। एक छात्र से आदर्श नागरिक बनना बिना शिक्षक के असंभव होता है।

कार्यक्रम का सञ्चालन डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र ने किया। कार्यक्रम के अंत में कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह जी ने विश्वविद्यालय की ओर से सभी अतिथियों एवं गणमान्यों का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारी, आचार्य, कर्मचारी एवं अन्य सामाजिक गणमान्य आनलाइन उपस्थित रहे।

शिक्षक के सम्मान से सम्पूर्ण राष्ट्र होता है सम्मानित – प्रो. ललित कुमार गौड़

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में शिक्षकदिवसोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. ललित कुमार गौड़ (विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र) उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आरम्भ मंगलाचारण तथा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र के समक्ष पुष्प अर्पण करके किया गया। सर्वप्रथम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल ने ऑनलाईन माध्यम से उपस्थित होकर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में बताया कि शिक्षक दिवस डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। प्राचीन काल में श्री कृष्ण ने गुरु रुप में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। गीता का उपदेश आज सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन कर रहा है। इससे यह कहा जा सकता है कि भारत में गुरु-शिष्य परम्परा पुरातन काल से चली आ रही है। उन्होंने कहा कि माता-पिता का स्थान जीवन में मुख्य है उनका ऋण सात जन्मों में भी व्यक्ति नहीं उतार सकता है। मां प्रथम गुरु बताई गई है। अपनी शिक्षा पूर्ण करके आगे फिर लोगों को शिक्षित करना ही व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिए। एक आदर्श शिक्षक कैसे बनें यह सीखना भी जरूरी है इसके लिए सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन को हम देख सकते हैं।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए दर्शन विभाग के सहायकाचार्य डॉ. शशिकान्त तिवारी ने कहा कि न केवल सज्जनों कों बल्कि दुर्जनों, दैत्यों तथा राक्षसों को भी गुरु की आवश्यकता होती है। कार्यक्रम के अंत में मुख्यातिथि, विश्वविद्यालय के आचार्यों एवं गणमान्यों को सम्मानित किया गया। साहित्य विभागीय आचार्य डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय ने विश्वविद्यालय की ओर से सभी गणमान्यों का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि शिक्षक सीढ़ी के समान है जिससे लोग ऊंचाइयों को छूते हैं और सीढ़ी वहीं की वहीं रहती है।

संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रचार प्रसार में जुटे आचार्यगण

संस्कृत विश्वविद्यालय में डिप्लोमा, शास्त्री व आचार्य कक्षाओं में प्रवेश शुरु

हरियाणा राज्य के प्रथम संस्कृत विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु प्रचार प्रसार पेहवा क्षेत्र से प्रारम्भ किया गया, जिसमें डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र, ज्योतिषाचार्य डॉ. नवीन शर्मा, डॉ. विनय गोपाल त्रिपाठी, आचार्य दीपक कौशिक आदि सक्रिय रूप से सहभागिता कर रहे हैं।

इस दौरान विभिन्न जनप्रतिनिधियों से सम्पर्क करते समय आचार्य गण क्रम में सर्वप्रथम श्री दक्षिणा कालीपीठ मन्दिर मॉडल टाउन पिहोवा के महन्त श्री बंशीपुरी जी महाराज से विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में बातचीत हुई, महाराज ने सभी आचार्यों को पूर्ण आश्वस्त किया कि अधिक से अधिक छात्रों का प्रवेश विश्वविद्यालय में करवाने का प्रयास करेंगे।

अनन्तर पिहोवा वार्ड 17 की पार्षद गीता डाबर से उनके क्षेत्र के छात्रों के प्रवेश के लिए चर्चा हुई, पार्षद महोदया ने भी पूर्ण आश्वासन दिया।

अरुणाय धाम श्री संगमेश्वर महादेव मंदिर के पुजारी शम्भूदत जी, ज्योतिषाचार्य यज्ञदत्त गोल्डी जी, मां बगलामुखी मन्दिर के स्वामी शिवदयाल पूरी, स्वामी अमरपुरी सरस्वती महातीर्थ के प्रधान पुजारी, सरस्वती महातीर्थ में भागवताचार्य श्री चतुर्भुज राधे राधे जी,बाबा श्रवण नाथ विद्यालय के प्रधानाचार्य राकेश जी एवं प्राचार्य गौरव जी से शिष्टाचार मुलाकात की तथा डॉ. शशिकांत तिवारी, डॉ. सुरेन्द्रपाल वत्स, डॉ. शर्मिला आदि ने कन्या गुरुकुल मौरमाजरा, करनाल तथा अनेकों स्थलों में जाकर वहाँ के प्राचार्या, कर्मचारियों, सरपंच आदि से मिलकर विश्वविद्यालय में अधिक से अधिक नामांकन के लिए चर्चा की और सभी ने पूर्ण आश्वस्त किया कि वे सभी छात्रों एवं अभिभावकों से सम्पर्क कर अधिक से अधिक छात्रों का प्रवेश संस्कृत विश्वविद्यालय में करवाने का प्रयास करेंगे। आचार्यों ने बताया कि कुरुक्षेत्र, जींद, नरवाना, कलायत आदि क्षेत्रों में भी उनकी टीम प्रचार प्रसार में जुटी है।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के छात्र ने संस्कृत प्रतियोगिता में प्राप्त किया द्वितीय स्थान

संस्कृत सप्ताह के उपलक्ष्य में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं पाली विभाग द्वारा 23 अगस्त 2021 को राज्य स्तरीय श्लोक उच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता गूगल मीट के माध्यम से प्रातः 11:00 बजे प्रारंभ हुई। प्रतियोगिता में महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के 2 प्रतिभागियों ने भाग ग्रहण किया। प्रतियोगिता 3 घंटे तक चली जिसमें गवर्नमेंट गर्ल्स पीजी कॉलेज की छात्रा सृष्टि ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग के छात्र दिनेश ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। तथा 1100 रुपए की धनराशि, प्रमाण पत्र विश्वविद्यालय की तरफ से प्रदान की गई, तृतीय स्थान प्रियंका ने प्राप्त किया। महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय की छात्रा शीतल को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। प्रतिभागियों को प्रथम पुरस्कार स्वरूप 2100. द्वितीय पुरस्कार स्वरूप 1100. तृतीय पुरस्कार स्वरूप 700 तथा सांत्वना पुरस्कार में प्रतिभागियों को 500 रुपए की धनराशि प्रदान की। महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल ने दोनों बच्चों को आशीर्वाद देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

संस्कृत सप्ताह समारोह- अगस्त 2021

(22/08/2021 दिनाङ्कतः 28/08/2021 दिनाङ्क यावत्)

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय एवं पंचनद शोध संस्थान इन दोनों के संयुक्त तत्त्वावधान में रविवार को संस्कृत दिवस मनाया जा रहा है इसके अन्तर्गत संस्कृत सप्ताह के रूप में कार्यक्रम करते हुए विश्वविद्यालय 22-28 अगस्त तक प्रतिदिन संस्कृत व्याख्यानमाला का आयोजन तरङ्गमाध्यम (Google Meet) से प्रारम्भ कर रहा है।

संस्कृत दिवस पर **"राष्ट्रीय एकात्मता में संस्कृत की भूमिका"** विषय पर कार्यक्रम का आयोजन गुगल मीट के माध्यम से किया गया जिसकी अध्यक्षता करते हुए माननीय कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल ने कहा कि संस्कृत भाषा समृद्ध, सक्षम व वैज्ञानिक भाषा है।

पंचनद शोध संस्थान के पूर्व अध्यक्ष एवं पी.जी, डी.ए. वी. महाविद्यालय चण्डीगढ के पूर्व प्राचार्य, भारतीय संस्कृति के उन्नायक तथा हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी एवं पंजाबी भाषाओं के मूर्धन्य विद्वान डॉ. कृष्ण सिंह आर्य ने मुख्य वक्ता के रूप में सबका मार्ग दर्शन किया। उन्होंने कहा कि आज सारा विश्व संस्कृत के प्रति अति उत्साह के साथ आगे बढ रहा है। हमारी सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान की धरोहर संस्कृत में है। इस कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में हरियाणा उच्चशिक्षा परिषद् के अध्यक्ष प्रो. बृजकिशोर कुठियाला जी ने कहा कि हमें अब संस्कृत में सन्निहित ज्ञान को व्यवहारिक रूप में उतारने के लिए काम करने की आवश्यकता है। प्रथम दिवस के कार्यक्रम का संचालन डॉ .जगतनारायण द्वारा, परिचय डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय द्वारा किया गया।

द्वितीय दिवस के कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में सेवानिवृत आचार्य व्याकरण विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय के प्रो. सत्यप्रकाश दूबे जी ने **"संस्कृत साहित्य में व्याकरण का वैशिष्ट्य"** विषय को प्रारम्भ करते हुए कहा विद्या हमारे राष्ट्र की अमुल्य निधि है।

भारत की व्याख्या करते हुए कहा **"भा का अर्थ है ज्ञान और रत का अर्थ है प्रकाश"** अर्थात् ज्ञान के द्वारा प्रकाश को प्राप्त करना। द्वितीय दिवस के कार्यक्रम का संचालन डॉ. शर्मिला द्वारा, परिचय डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय द्वारा एवं मगलाचरण डॉ. मदनमोहन तिवारी जी द्वारा किया गया।

तृतीय दिवस के कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में विभागाध्यक्ष, राजनीति एवं विज्ञान विभाग, चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के प्रो. पवन शर्मा जी ने **"भारतीय ज्ञान विज्ञान और दर्शन के प्रतिष्ठान में संस्कृत "**- विषय को प्रारम्भ करते हुए कहा कि

संस्कृत हमारे राष्ट्र की अमुल्य निधि है। जिसके एक-एक वेद, पुराण तथा शास्त्र के विभिन्न अमूल्य ज्ञान का भण्डार विद्यमान है। सृष्टि की उत्पत्ति अग्नि पुराण, विष्णु पुराण आदि के अनुसार 15,00,000 वर्ष से भी अधिक कहा गया है। तृतीय दिवस के कार्यक्रम का संचालन डॉ. शशिकान्त तिवारी जी द्वारा, परिचय डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय द्वारा किया गया।

चतुर्थ दिवस पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल के कुशल नेतृत्व एवं अध्यक्षता में सभी का स्वागत करते हुए प्रारम्भ किया गया। उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर

वर्तमान समय में **ज्यौतिष एवं वास्तु शास्त्र की प्रासङ्गिकता** विषय पर कहा कि काल का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र के सूर्यादि नव ग्रहों के द्वारा किया जाता है। प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी ने कहा हर ज्योतिषशास्त्र एवं वास्तुशास्त्र जिज्ञासु के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। अतः महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय मौनधारा कैथल हरियाणा इस दिशा में अग्रसर है तथा प्रदेश के छात्र-छात्राओं ज्ञानी एवं विज्ञानी बनाने के लिए कटिबद्ध प्रतीत होता है। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन ज्योतिषाचार्य डॉ. नरेश कौशिक द्वारा एवं डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय द्वारा परिचय करवाया गया।

पंचम दिवस में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. सी. उपेन्द्रराव (आचार्य, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली) उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय द्वारा मुख्यवक्ता एवं गणमान्यों का परिचय करवाया गया।

मुख्य वक्ता ने **"वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत का अध्ययन"** विषय पर विस्तृत रूप से सभी का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि विश्व के अनेक देश ऐसे हैं जो संस्कृत को जानने और शोध करने में हम से आगे हैं। मुख्यवक्ता द्वारा विभिन्न तथ्यों के आधार पर मार्गदर्शन किया गया। कार्यक्रम का संचालन व्याकरणाचार्य डॉ. रामानंद मिश्र जी द्वारा एवं मंगलाचरण डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के आचार्यों, कर्मचारियों एवं छात्रों ने भाग ग्रहण किया।

छठे दिन मुख्य वक्ता के रुप में प्रो. रवि प्रकाश आर्य (महर्षि दयानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, रोहतक) तथा मुख्य अतिथि के रुप में प्रो. विद्येश्वर झा (अध्यक्ष, वेदविभाग, का. सिं. द. संस्कृत विश्वविद्यालय) रहे।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता ने अपने वक्तव्य में वेदों में विज्ञान का स्वरूप विषय पर विस्तृत रूप से मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि वेद ज्ञान का स्वरूप है। यह केवल हिंदुओं की धार्मिक पुस्तक नहीं है, बल्कि विशुद्ध ज्ञान का समुद्र है। उन्होंने कहा कि आधुनिक और वैदिक विज्ञान के अंतर को समझना आवश्यक है। वैदिक विज्ञान आत्मा, ब्रह्म, मन तथा भूख प्यास आदि सभी को परिभाषित करता है। जो व्यक्ति को दिखाई देता है, वैसा ही विज्ञान का प्रादुर्भाव होता है। चाणक्य के अर्थशास्त्र में व्यवसायिक जातियों का वर्णन मिलता है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विद्येश्वर झा जी ने वेद और पुराण की चर्चा करते हुए निरुक्त, मनुस्मृति एवं महाभाष्य के उदाहरणों के माध्यम से मार्गदर्शन किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में **वेदों में निहित विज्ञान का स्वरूप** तथ्यों के माध्यम से स्पष्ट किया। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह ने मुख्य वक्ता एवं सभी गणमान्यों का विश्वविद्यालय की ओर से आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन वेदाचार्य डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र जी द्वारा किया गया।

संस्कृत सप्ताह के समापन कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में **संस्कृत भाषा के मार्गदर्शक** डॉ. चांद किरण सलूजा (निदेशक, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान, दिल्ली) मुख्य वक्ता के रुप में उपस्थित रहे। मंगलाचरण के उपरान्त मुख्य वक्ता ने **21वीं सदी में संस्कृत शिक्षा का स्वरूप'** विषय पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से सभी का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि जिस राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की गई है, उसको पढ़ते ही यह अनुभूत होता है कि यह संस्कृत की नीति है। इससे पूर्व भारत में दो बार शिक्षा नीति का प्रारूप 1968 और 1986 में लागू किया गया था। उन्होंने बताया कि संविधान के 21वें अनुच्छेद में भाषा को जीवन का आधार तथा 19 में अनुच्छेद में भाषा को ही अभिव्यक्ति का आधार बताया गया है। 14वें अध्याय में विद्यालय स्तर की शिक्षा के संबंध में वर्णन है। अनुच्छेद 15 एवं 16 में भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए यह वर्णन है। 17वें अध्याय में शिक्षा के मौलिक अधिकार के बारे में बताया गया। संविधान की अष्टमी अनुसूची में 22 भाषाओं का उल्लेख है। कार्यक्रम में पंचनद शोध संस्थान के सदस्यों एवं विश्वविद्यालय के आचार्यों, कर्मचारियों एवं छात्रों ने भाग ग्रहण किया। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह ने मुख्य वक्ता एवं विगत सप्ताह में आने वाले सभी विद्वानों का मार्गदर्शन के रुप में आने का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य के लिए विश्वविद्यालय की नीति-रीति के देख-रेख व मार्गदर्शन हेतु निवेदन करते हुए सभी गणमान्यों का विश्वविद्यालय की ओर से आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन व्याकरणाचार्य डॉ. सुरेन्द्र पाल वत्स जी द्वारा किया गया।

विद्या

संसार में विद्या के समान कोई भी पदार्थ विशेष नहीं है। संसार के समस्त पदार्थों का तात्त्विक ज्ञान भी विद्या से ही होता है। विद्या तो बाँटने से बढ़ती ही है। आदर - सत्कार, प्रतिष्ठा भी विद्या से मिलते हैं। क्योंकि विद्वान् जहाँ - जहाँ जाता है, वहाँ - वहाँ उसका आदर - सत्कार होता है। विद्या के प्रभाव से मनुष्य जो चाहे सो कर सकता है। विद्या गुप्त और परम धन है।

भोग के द्वारा विद्या कामधेनु और कल्पवृक्ष की भाँति फल देनेवाली है। विद्या की बड़ाई कहाँ तक की जाय, मुक्ति तक विद्या से मिलती है ; क्योंकि ज्ञान विद्या का ही नाम है और बिना ज्ञान के मुक्ति होती नहीं, इसलिये विद्या मुक्ति को देने वाली भी है।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं
विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं विद्या विहीनः पशुः॥

(भर्तृहरिनीतिशतक २०)

विद्या ही मनुष्य का अधिक से अधिक रूप और ढका हुआ गुप्त धन है, विद्या ही भोग, यश और सुखों को देने वाली है तथा विद्या गुरुओं की भी गुरु है। विदेश में गमन करने पर विद्या ही बन्धु के समान सहायक हुआ करती है, विद्या परम देवता है, राजाओं के यहाँ भी विद्या की ही पूजा होती है, धन की नहीं। इसलिये जो मनुष्य विद्या से हीन है, वह पशु के समान है। आचार्य चाणक्य कहते है कि -

कामधेनुगुणा विद्या तत्काले फलदायिनी।
प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम्॥

(चाणक्य ०४।५)

विद्या में कामधेनु के समान गुण हैं। यह अकाल में भी फल देने वाली है, यह विद्या मनुष्य का गुह्यधन स्वीकारा गया है। विदेश में यह माता के समान (पालन करती) है।

न चोरहार्यं न च राजहार्यं,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं,
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

विद्या को चोर या राजा नहीं छीन सकते। भाई इसका बँटवारा नहीं करा सकते और इसको धारण करने पर भी कुछ भार नहीं लगता तथा दान करने से यानी दूसरों को पढ़ाने से यह विद्या नित्य बढ़ती रहती है. अतः विद्या रूपी धन सब धनों में प्रधान है। ' धर्मशास्त्रों का ज्ञान भी विद्या से ही होता है। शास्त्र का अभ्यास वाणी का तप है, ऐसा गीता में भी कहा है -

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥

गीता (१७।१५)

जो उद्वेग को न करने वाला, प्रिय और हितकारक एवं यथार्थ भाषण और (जो) वेद - शास्त्रों के पढ़ने का एवं परमेश्वर के नाम जपने का अभ्यास है, वह निःसन्देह वाणी सम्बन्धी तप कहा जाता है। अतएव बालकों को शास्त्रों के अभ्यास के लिये तो विद्या का अभ्यास विशेष रूप से करना चाहिये। विद्या पढ़ाने में माता-पिता को भी पूरी सहायता करनी चाहिये। क्योंकि जो माता-पिता अपने बालक को विद्या नहीं पढ़ाते हैं वे शत्रु के समान माने गये हैं –

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

(चाणक्य ०२।११)

वे माता-पिता दोनों ही वैरी के समान हैं, जिन्होंने अपने बालक को विद्या नहीं पढ़ायी, क्योंकि अनपढ़ बालक सभा में वैसे ही शोभा नहीं पाता जैसे हंसों के बीच में बगुला। अतः बालकों को भी स्वयं पढ़ने के लिये विशेष चेष्टा करनी चाहिये। क्योंकि चाणक्य ने कहा है -

रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः॥

चाणक्य नीति (३/८)

विद्या रहित मनुष्य रूप और यौवन से सम्पन्न एवं बड़े कुल में उत्पन्न होने पर भी विद्वानों की सभा में उसी प्रकार शोभा नहीं पाते जैसे बिना सुगन्ध का पुष्प। इसलिये हे बालको ! विद्या का अभ्यास ही तुम्हारे लिये अत्यन्त आवश्यक है। अब तक जितने विद्वान् हुए और वर्तमान में जो हैं, उनका विद्या के प्रताप से ही आदर - सत्कार हुआ और हो रहा है। बड़प्पन (विशिष्टता) और गौरव में भी विद्या के समान जाति, आयु, अवस्था, धन, कुटुम्ब कुछ भी नहीं है। मनुजी कहते हैं।

वित्तं बन्धुर्वयः कर्म विद्या भवति पञ्चमी।
एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम्॥

मनुस्मृति (२।१३६)

धन, कुटुम्ब, आयु, कर्म और पाँचवीं विद्या - ये बड़प्पन (विशिष्टता) के स्थान हैं। इनमें से जो - जो पीछे हैं वही पहले से बड़ा है अर्थात् धन से कुटुम्ब बड़ा है, कुटुम्ब से आयु बड़ी है, आयु से कर्म बड़ा है और कर्म से अर्थात् सबसे ज्यादा विद्या बड़ी है अर्थात् सबसे बड़ी विद्या ही है।

आचार्य मनुजी कहते है कि -

न हायनैर्न पलितैर्न वित्तेन न बन्धुभिः।
ऋषयश्चक्रिरे धर्म योऽनूचानः स नो महान्॥

(मनुस्मृति -२।१५४)

न बहुत वर्षों की अवस्था से, न सफेद बालों से, न धन से, न भाई बन्धुओं से कोई बड़ा होता है। केवल व्यक्ति ज्ञान से बड़ होता है ऋषियों ने यह धर्म किया है कि जो अङ्गों सहित वेद पढ़ने वाला है वही हम लोगों में बड़ा है।

न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः।
यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः॥

(मनुस्मृति-२।१५६)

सिर के बाल सफेद होने से कोई बड़ा नहीं होता। तरुण होकर भी जो विद्वान् होता है, उसे देवता वृद्ध मानते हैं। यही नहीं अपितु विद्या से व्यक्ति को सब कुछ मिल सकता है, किंतु कल्याण के चाहने वाले मनुष्यों को केवल वेद, शास्त्र और ईश्वर का तत्त्व जानने के लिये ही अभ्यास करना चाहिये। अभ्यास करने में सांसारिक सुखों का त्याग और महान् कष्टों का सामना करना पड़े तो भी हिचकना नहीं चाहिये। इसलिये हे बालको ! तुम लोगों को भी स्वाद, शौक, भोग, आराम, आलस्य और प्रमाद को विद्या में बाधक समझकर इन सबका एकदम त्याग करके विद्याभ्यास करने के लिये कटिबद्ध होकर मृत्यु पर्यन्त चेष्टा करनी चाहिये।

डॉ. नरेश शर्मा
ज्योतिषाचार्य

"हृदय"

हृदय शब्द की उत्पति के विषय में शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि हृदय को हृदय इसलिए कहा जाता है क्योंकि, यह तीन काम करता है:-

ह्र - हरति
द - ददाति
य - याति

ये लेता है, देता है और चलता है। अर्थात् हृदय शरीर से अशुद्ध रक्त को लेकर फेफड़ों द्वारा शुद्ध करके उसे शरीर को देता रहता है इसी उद्देश्य से निरन्तर गति करता रहता है (चलता है)। इस प्रकार से हृदय निरन्तर शरीर में रक्त संचार का काम करता रहता है।

डा. मदनमोहनतिवारी
सहायकाचार्य:
वेदविभाग:

हितवचनम्

"नाक्रोशी स्यान्नावमानी परस्य
मित्रद्रोही नोत नीचोपसेवी।
न चाभिमानी न च हीनवृत्तो
रूक्षां वाचं रुषतीं वर्जयीत॥"

यो मनुष्यः कदापि आक्रोशी न भवति, इतरेषाम् अवमाननां न करोति, मित्रद्रोहं नाचरति, दुष्टजनानां सेवां न करोति, आत्माभिमानी चरित्रहिनश्च न भवति, एवम् इतरान् पीडयन्तीं परुषां वाचञ्च वर्जयति इति एतादृशः आचरणशीलः पुरुषो हि लोके उत्तमः कथ्यते इति विदुरवचनम्। इति स्वस्ति।

अनिलः शास्त्री
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

श्लोका:

हंस: श्वेत: बक: श्वेत: को भेद: बकहंसयो: ।
नीरक्षीरविवेके तु हंसो हंस: बको बक: ॥
(हंस भी सफेद रंग का होता है तथा बगुला भी सफेद रंग का होता है।
पर इन दोनों में क्या भेद है। जल और दूध में अन्तर अगर करना है
तो हंस हंस है और बगुला बगुला।)

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्म: तत: सुखम् ॥
(विद्या हमें विन्रमता प्रदान करती है, विन्रमता से योग्यता आती है,
योग्यता से धन तथा धन से हमें सुख की प्राप्ति होती है ॥)

भूमे: गरीयसी माता, स्वर्गात् उच्चतर: पिता ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गात् अपि गरीयसी ॥
(भूमि से श्रेष्ठ माता है, स्वर्ग से ऊंचे पिता है,
माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है ॥)

पुस्तकस्तथा तु या विद्या, परहस्तगतं च धनम् ।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम् ॥
(पुस्तक में रखी विद्या तथा दुसरें के हाथ में गया धन
दोनों ही जरुरत के समय में हमारे किसी भी काम में नही आती ॥)

बिन्दू
आचार्य (साहित्य)

नैव क्लिष्टा न च कठिना

सुरस सुबोधा, विश्वमनोज्ञा
ललिता हृद्या, रमणीया ।
अमृतवाणी संस्कृतभाषा,
नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥

कवि कोकिला, वाल्मीकि विरचिता
रामायण रमणीय कथा ।
अतीवसरला मधुर मंजुला
नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥

व्यास विरचिता गणेश लिखिता
महाभारते पुण्य कथा
कौरव पाण्डव संगर मथिता
नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥

कुरुक्षेत्र समरांगणगीता
विश्ववंदिता भगवद्गीता
अतीव मधुरा कर्मदीपिका
नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥

कवि कुलगुरु नव रसोन्मेषजा
ऋतु रघु कुमार कविता
विक्रम-शाकुन्तल-मालविका
नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥

अन्जू रानी
आचार्य साहित्य

भारतीयसंस्कृति:

जब धरती पर तमस छाया था
हर तरफ अज्ञान का साया था ।
तब एक संस्कृति ने था जन्म लिया
हर मानव को जीने का ढग दिया ॥

जब मनुष्य पशु सा इठलाता था
उसे बोलने तक को कुछ न आता था ।
तब उस मानव को मनुष्य रूप दिया
प्रभु की सर्वोत्तम कृति का स्वरूप दिया ॥

जब मनुष्य जीवन-मरण से दुख पाता था
अपने अस्तित्व का लक्ष्य न खोज पाता था ।
न समझ पाता था प्रकृति का गहन मर्म वो
जो बांधे मनुष्य को बन्धुत्व से है क्या धर्म वो ॥

तब कर अथक तप प्रयास मनुज ने
उस परम सत्य को भी धार लिया ।
कर दृष्ट उस परम ज्ञान को
वेद-उपनिषदों-सा सार दिया ॥

दिया सर्वोत्तम संबंध गुरू शिष्य का
समस्त विषयों पर प्रकाश दिया ।
हे धन्य महावीरों कर समग्र जीवन अर्पित
भारतीय संस्कृति का श्रृंगार किया ॥

धवल शर्मा
ज्योतिष (आचार्य)

अद्यतनी सामाजिकस्थिति: न सुखाय

अद्यत्वे मनुष्यस्य हननं सामान्यं जातं दृश्यते शुनकबिडालवत् । पूर्वं तु अखिलविश्वे एव सामाजिकस्थिति: अत्यन्तं मानवतापूर्णा, शान्तिसम्प्रीतियुक्ता च आसीत् । परन्तु विगतेभ्य: प्राय: त्रिंशत्वर्षेभ्य: सामाजिकस्थित्यां शनै: मालिन्यम् आच्छादितमभवत् इति परिलक्ष्यते । विशेषत: यदारभ्य सर्वत्र दूरदर्शनम्, दूरवाणीयन्त्रम्,अन्तर्जालम् इत्यादीनां सौविध्यं सुलभञ्च जातम् अभवत्, तदारभ्य एव सामाजिकस्थित्यामपि एकं नूतनं परिवर्तनं गतम् । यत्परिवर्तनं शुभदिशि गन्तव्यमासीत्, परन्तु तत् अशुभदिशि एव गच्छत् दृश्यते । अनेन विज्ञान-संसाधनेन अधुनातना: बाला: हि अत्यन्तं दुष्प्रभाविता: दृश्येरन् । तेषां भाविजीवनं कीदृशम् इत्येतत् न किमपि ज्ञायते, तदन्धकारगर्ते हि विद्यमानं स्यात् । अत: अधिकं सौविध्यमपि न कल्याणाय कस्यापि । अधुनातनं चलचित्रजगदपि जनान् अन्यदिशि हि नीयमानं दृश्यते, अत्र न कोऽपि स्वीकरणीय: जीवनादर्श: हि उपलभ्यते ।

अन्यच्च, लोके जनसङ्ख्याया: दूतगत्या वृद्धि: । अत: स्थान-अन्न-कर्मसंस्थानादिकी समस्या स्वाभाविकी जातास्ति । प्राय: जना: पठितार: हि अत: कृषिक्षेत्रोद्योगश्रमादिषु तेषां स्वाभाविकी अरुचि:, सर्वकारीय: नियोग: अपि सीमित: इत्यादीनां नानाकारणत: अद्य तु सामाजिकी समस्या हि समस्या केवलम् । राजनैतिकी स्थिरतापि नावलोक्यते, न वा पारम्परिकी धर्मीयनीति: हि । साम्प्रदायिकी विभीषिका एकत्र, जनोच्छ्रङ्खलता अन्यत्र च । अत: अराजकता हि विराजते विश्वे । पशुपक्षिणोऽपि सर्वे दु:खिता: मानवस्य हि दुष्प्रभावात् । अत: हननसदृशं महत्पापकार्यमपि स्वाभाविकम् अभवत् अधुना, यच्च बुद्धिजीविनां सज्जनानाञ्च हृदि नितरां क्लेशं खेदञ्च जनयदस्तीति ।

पंकज: भारतीय:
(शास्त्री)

नारी तु नारायणी

नारी निन्दा न करणीया
नारी एव नराणां जननी

कथितमस्ति यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते-
रमन्ते तत्र देवता
रमन्ते तत्र देवता

नार्य: एव भवन्ति माता, भगिनी श्वसा
नारी एव जगज्जननी
सर्वेषां सर्वदुख:हारिणि
सर्वसुखकारिणि

नारी तु नारायणी
नारी तु नारायणी

आदिनाथ सावंत
शास्त्री

संस्कृतदिवस:

आमन्त्रतोल्लसविलासिवर्ष:
विवृद्ववृद्वौधहृषीकहर्ष :।
विद्योतितच्छात्रगुणप्रकर्ष :
सुपर्वभाषादिवसोऽयमार्ष :॥
मनोमुद: कोविदकुञ्जराणं
तन्यतन्त एतेन च निर्जराणाम् ।
गुणैर्गरिष्ठैरिह भासमानो
विराजतां संस्कृतवासरोऽयम् ॥
प्रतिप्रदेशं किल कीर्तिघोष:
जनै: समुत्तोल्य मुदा स्वदोष: ।
गीर्वाणवाणी गुणगौरवाणा-
-माचर्यते संसदि कोविदानाम् ॥

मोनिका
आचार्य (साहित्य)

कोरोनाविषाणु:

कोरोनाविषाणु: एक: विश्वव्यापी संक्रमण: अस्ति । कोरोनाविषाणु: अनेकप्रकाराणां विषाणुनाम् एक: समूह: भवति । कोरोनाविषाणु: मानवेषु श्वासनलिकासु संक्रमणं भवितुम् अर्हति । कोरोनाविषाणो प्रकोपस्य आरम्भ: चीनादेशस्य वुहाननगरत: 2019 वर्षे जात: । विश्वस्वास्थ्यसंघटनेन अस्य विषाणु समूहस्य नाम कोविड19 इति दत्तम् । विश्व-स्वास्थ्य-सघटनम् कथयत् यत् कोविड 19 एका महामारी अस्ति । कोरोना महामारी काले गृहे अवस्थानम् अति उत्तम् अस्ति । कोरोनाकाले रुग्ण: प्रतिरोधक क्षमता कृते पौष्टिक आहार आवश्यक: अस्ति । द्विगजस्य सामाजिक-अनन्तरं मुखसंरक्षकम् आवरण प्रयोगं च आवश्यक: अस्ति । कोरोना-महामारीमुक्त: सर्वे जना: सहयोगम् अति आवश्यक: अस्ति ।

नीलम
आचार्य (साहित्य)

हरियाणा दर्शनम्

हरियाणाप्रदेश: भारतदेशस्य प्रमुख: प्रदेश: अस्ति । स्वतन्त्रराज्य रूपेण अस्य स्थापना षट्षष्ट्युत्तरएकोनविंशतितमे ईशवीये वर्षे नवम्बरमासस्य प्रथमतारिकायाम् । अस्मिन् प्रदेशे बहुनि दर्शनीयानि स्थानानि सन्ति । यानि द्रष्टुं पर्यटका: आगच्छन्ति । एतेषु हिसारनगरम् ऐतिहासिकं प्राचीनं च अस्ति । गुजरी प्रसादस्य शिल्पकला दर्शनीया वर्तते । हांसी इति स्थले पृथ्वीराज चौहानस्य दुर्ग: अस्ति । य: पर्यटकान् आकर्षयति । कुरूक्षेत्रस्य महत्त्वं पवित्रतां च सर्वे जानन्ति एव अत्रैव भगवान् श्रीकृष्ण: अर्जुनाय गीताया: उपदेशं कृतवान् । गुरुग्रामजनपदे विद्यमानं सोहना नामक स्थाने विशिष्टं महत्त्वं भजते । अत्र पर्वतस्य भूभागाद् उष्णजलस्य स्त्रोत: निर्गच्छति । चण्डीगढनगरं निकषा पिञ्जौर नामकं स्थानमपि नितरां रमणीयम् अस्ति । एवं कथ्यते यत् पाण्डवा: वनवासस्य द्वादश वर्षाणि यावत् अत्र निवासं कृतवन्त: । हरियाणाराज्यस्य पानीपतनगरं हस्तशिल्पोद्योगकारणात् भारते प्रसिद्धम् अस्ति । अत्र बू-अली शाहकलन्दरस्य समाधि स्थलं वर्तते । अस्य राज्यस्य महेन्द्रगढ-सिरसा-जीन्द-कैथलादिषु जनपदेषु अपि अनेकानि प्रसिद्धानि स्थानानि सन्ति । किं बहुना सकलं हरियाणा राज्यम् एव दर्शनीयम् अस्ति । अस्य वैभवं रमणीयतां च विलोक्य सत्यमेव उक्तम् देश: अस्ति हरियाणाख्य: पृथ्वियां स्वर्गसन्निभ:॥

अमनदीप
आचार्य (साहित्य)

प्रश्नमञ्जरी
विषय: – व्याकरण

१. सन्धे: कति भेदा: सन्ति ?
(i) चत्वार: (ii) त्रय: (iii) पञ्च (iv) षट्

२. संस्कृतम् इति पदे प्रत्यय: क: ?
(i) त (ii) क्त (iii) तम् (iv) अप्

३. 'अष्टाध्यायी' इति ग्रन्थस्य रचयिता क: ?
(i) पाणिनि: (ii) कात्यायन: (iii) पतञ्जलि: (iv) भर्तृहरि:

४. उपसर्गाणां संख्या कति ?
(i) 12 (ii) 22 (iii) 20 (iv) 30

५. समासस्य कति भेदा: सन्ति ?
(i) पञ्च (ii) षट् (iii) चत्वार: (iv) त्रय:

६. संस्कृतभाषायां कारकस्य कति भेदा: सन्ति ?
(i) षट् (ii) सप्त (iii) पञ्च (iv) नव

७. 'संज्ञा' इति पदे प्रत्यय: क: ?
(i) आप् (ii) चाप् (iii) टाप् (iv) ङीप्

८. संस्कृतभाषायां कति पुरुषा: सन्ति ?
(i) त्रय: (ii) चत्वार: (iii) षट् (iv) द्वि

९. सर्वासां भाषाणां जननी का भाषाऽऽस्ति ?
(i) हिन्दी (ii) संस्कृतम् (iii) पञ्जाबी (iv) ऊर्दू

१०. 'व्याकरणम्' इति पदे प्रत्यय: क: ?
(i) अम् (ii) ल्यु (iii) ल्युट् (iv) क्त

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(प्रथमाङ्कस्य उत्तराणि)

(१) 40 (२) 08 (३) 1000 (४) ऋग्वेदे (५) याज्ञवल्क्यशिक्षा (६) वेदस्य (७) अष्टौ (८) 15 (९) यजुर्वेद: (१०) दश

व्यवहारवाक्यानि

१. भवत: प्रान्तस्य नाम किम् ?	आपके प्रान्त का नाम क्या है ?
२. अहं स्नातक-कक्षायां पठामि।	मैं स्नातक कक्षा में पढ़ता हूँ।
३. अहं विद्यालय गच्छामि।	मैं विद्यालय में जाता हूँ।
४. भवान् कुत्र गच्छति ?	आप कहां जाते हो ?
५. अहं न जानामि।	मैं नहीं जानता हूँ।
६. आवश्यकं नास्ति।	आवश्यक नहीं है।
७. भवान् कथम् अस्ति ?	आप कैसे हो ?
८. भवान् श्रावयतु।	आप सुनाईये।
९. किं गृहे सर्वं कुशलम् ?	क्या घर पर सब कुशल हैं ?
१०. चायं पास्यसि किम् ?	चाय पियेंगे क्या ?

प्रभु से प्रार्थना

ओ३म् गणानां त्वा गणपतिं हवामहे।
प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे।
निधीनां त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

यजुर्वेद- २३- १

हे परमपिता परमात्मा। आप समस्त समूहों के राजा हैं, हम आपकी प्रजा हैं, इसलिए मैं आपको गणपति अर्थात् गणेश नाम से पुकार रहा हूँ। आप प्रिय पदार्थों के पति हैं, आप समस्त धन सम्पत्तियों, खजानों आदि के स्वामी हैं, आप मेरे अर्थात् हम सबको वसाने वाले वसु हैं, आप जन्म आदि दोष से रहित हैं, मैं भी अपनी अविद्या को दूर फेंक दूँ। हे प्रभु। मैं समस्त प्रकृति को गर्भ में रखने वाले आप को जान सकूँ। ऐसी आपसे विनम्र प्रार्थना है। इस मंत्र का प्रतिदिन पाठ करने से विशेष लाभ होता है।

डॉ.नवीन शर्मा
ज्योतिषाचार्य

शिक्षकस्सादरं नम्यते देवता

शिक्षकान्तो पदं श्रेष्ठसम्मानितं
शिक्षकान्तो परा देवता भूतले।
सत्समाजं विनिर्माति योऽहर्निशं
शिक्षकस्सादरं नम्यतेऽसौ हृदा ॥१॥

मूर्खशिष्यो भवेद्विज्ञशिष्योऽथवा
राजपुत्रो भवेद्भृत्यपुत्रस्तथा।
भेददृष्टिं न संस्थापयत्यात्मना
शिक्षकस्सादरं नम्यतेऽसौ हृदा ॥२॥

कौशिकस्सन्मुनि: पूज्यते नित्यशो
येन रामप्रभु: पाठितश्शिक्षक:।
दिव्यसन्दीपनी पूज्यते चेतसा
येन कृष्णोऽमरोऽध्यापितश्शिक्षक:॥३॥

द्रोणवर्योऽधुना स्मर्यते मानसे
येन सम्पाठितश्चार्जुनश्शिक्षक:।
पूज्यवाल्मीकिदेवो मया नम्यते
येन सन्निर्मितश्श्रीलवश्श्रीकुश:॥४॥

नम्यते श्रीसुराचार्यवर्योऽधुना
येन सम्बोधिता देवताश्शिक्षक:।
ध्यायते वै भृगो: पुत्रकश्शिक्षको
येन दैत्यास्समस्तास्स्वयम्पाठिता: ॥५॥

नम्यते श्रेष्ठकण्वो मुनिश्शिक्षको
येन सम्पाठिता मेनकापुत्रिका।
रेणुकापुत्रको नम्यते श्रद्धया
येन कर्णो बली पाठितश्शिक्षक:॥६॥

पूज्यते मातृका नम्यते श्रीपिता
शिक्षकत्वेन तौ देवदेवौ प्रियौ।
प्राप्य याभ्यां जनिं सन्तति: पश्यति
विश्वमेतत्प्रपञ्चात्मकं भूतलम् ॥७॥

शिक्षकस्सर्वपल्ली कलामस्तथा
वासुदेवो बुध: कृष्णकान्तो गुरु:।
नम्यते पूज्यते ध्यायते सर्वदा
शिक्षको देवता शिक्षको देवता ॥८॥

डॉ.शशिकान्ततिवारी
सहायकाचार्य:
दर्शनविभाग:

गर्व से कहो संस्कृत वाले हैं हम

भाग्य से मिला, हमें मानव जन्म
सौभाग्य से रखा हमने संस्कृत में कदम
कहते हैं लोग मां भारती के रखवाले है ये
संस्कारों से झलकता है संस्कृत वाले हैं ये

करते सदा यह वैरी पर भी उपकार है
लगता ऐसे मानो इनका धर्म ही परोपकार है
देवों के जैसे क्षमा ही इनका हथियार है
बुलाते हैं आदर से सब इनके इतने अच्छे विचार हैं

मुख में संस्कृत सरल इनका व्यवहार है
छोटा बड़ा छोड़ सारा विश्व ही इनका परिवार है
अपनी मस्ती में रहते ऐसे मतवाले हैं ये
संस्कारों से झलकता है संस्कृत वाले हैं ये

लगे हैं सेवा में निस्वार्थ इस जमाने में
बनी अज्ञानी सोच को ज्ञान से मिटाने में
रामायण गीता पढ़ लो लगे हैं ऐसे बनाने में
संस्कृत भाषा की शैली निशुल्क सब को पढ़ाने में

प्यारे लाल
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

हास्य कविता

१) पितु: - वत्स ! त्वम् अध्ययनं किमर्थ न करोषि। त्वं जानासि, पण्डित जवाहर लाल नेहरू यदा तव वयसि आसीत् तदा स्व- कक्षायां प्रथमं स्थानं प्राप्नोति स्म।
पुत्र - जानामि पित: जानामि।
पण्डित जवाहर लाल नेहरू यदा भवत: वयसि आसीत्। तदा स: भारतदेशस्य प्रधानमन्त्री आसीत्।

२) भ्राता - किं भो ! अद्य विद्यालयं न गच्छसि ?
किम् अद्य अवकाश: अस्ति ?
भागिनी - न न अवकाश तु श्व:, रविवासरे परं मया एव पठितं यत् श्व: करणीयानि कार्याणि अद्यैव करोति बुद्धिमान:।

३) पति - मम स्नानाय उष्णं जलं शीघ्र आनय, अन्यथा
पत्नी - अन्यथा भवान् किं करिष्यति ?
पति - किं करिष्यामि ? शीतलजलेनैव स्नानं करिष्यामि।

४) पितु - धिक् वत्स ! किं इदम .....
आगंलभाषायां षट्तिंशत् (३६)
गणितविषये (३५)
विज्ञानविषये (३६)
हिन्दीभाषायां सप्तत्रिंशत् (३७)
अंकास्त्वया लब्धा: धिकतवान्।
पत्नी - स्वामिन: ! इदं भवत: पुत्रस्य अकंपत्रं नास्ति। इदं तु भवत: अकंपत्रम् अस्ति। इदं मया पेटिकात: एव प्राप्तम्।

५) अध्यापक: -आंग्लभाषायां पत्नी किं कथयति ?
छात्र:- गुरो ! न केवलम् आंग्ले अपितु कस्यामपि भाषायां कश्चिदपि पत्नीं न वक्तुं शक्नोति।

६) भिक्षुक: - भगवत: नाम किञ्चित देहि बाबा
बालिका - अहं बाबा न, तनया अस्मि।
भिक्षुक: - भगवत: नाम किञ्चित देहि तनये।
बालिका - मम नाम मीशा अस्ति।
भिक्षुक: - भगवत: नाम किञ्चित देहि तनये मीशे।
बालिका - मम पूर्ण नाम मीशा वर्मा अस्ति।
भिक्षुक: - भगवत: नाम किञ्चित देहि तनये मीशे वर्मन।
बालिका - गृहे माम् ! स्नेहेन राजकुमारी कथयन्ति।
भिक्षकु: - भगवत: नाम किञ्चित देहि तनये राजकुमारी मीशे वर्मन्।
बालिका - आम् अधुना सम्यक् अस्ति।
क्षम्यताम् बाबा ! गृहे किञ्चित अपि नास्ति।
भिक्षुक: मूर्च्छित:॥

रजनी देवी-आचार्य
(संस्कृत पत्रकारिता)

अमूल्य: निधय:

विसर्जितुं किम् अस्ति ? -	विद्या
ग्रहीतुं किम् अस्ति -	ज्ञानम्
दातुं किम् अस्ति -	दानम्
वक्तुं किम् अस्ति ? -	सत्यम्
प्राप्तुं किम् अस्ति ? -	सफलता
रक्षितुं किम् अस्ति ? -	स्वाभिमानम्
क्षेप्तुं किम अस्ति ? -	ईर्ष्या
यातुं किम् अस्ति ? -	क्रोध:
त्यक्तुं किम् अस्ति ? -	मोह:
जेतुं किम् अस्ति ? -	मन:
नष्टुं का अस्ति ? -	अज्ञानता

डॉ. महावीर
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दड़ी), कपिष्ठलम् (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम 20/2018 द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी के धारा 2(F) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

प्रवेश आरम्भ सत्र 2021-2022

प्रवेश की अंतिम दिनांक 31/10/2021

शास्त्री (बी.ए.)
शुल्क 2500/- (प्रति वर्ष)

- विशेषाध्ययन (इनमें से कोई एक)

व्याकरण	साहित्य	दर्शन
ज्योतिष	सं.पत्रकारिता	वेद
धर्मशास्त्र	पुराणेतिहास	योग

- अनिवार्य विषय – हिन्दी, अंग्रेजी
- ऐच्छिक विषय – इतिहास, राजनीति, लोक-प्रशासन, अर्थशास्त्र, भूगोल, संगणक, समाज शास्त्र (इनमें से कोई एक)

आचार्य (एम. ए.)
शुल्क 2630/- (प्रति वर्ष)

व्याकरण	ज्योतिष
साहित्य	दर्शन
वेद	योग
हिन्दू अध्ययन	संस्कृत पत्रकारिता
धर्मशास्त्र	पुराणेतिहास

एक वर्षीय डिप्लोमा शुल्क 6000/- (प्रति वर्ष)
(अंशकालीन पाठ्यक्रम)

- ✓ ज्योतिष
- ✓ वास्तुशास्त्र
- ✓ कर्मकाण्ड
- ✓ संस्कृत पत्रकारिता
- ✓ वेब-डिजाईनिंग इन संस्कृत
- ✓ संगणक (कम्प्यूटर)
- ✓ जीवन-प्रबन्धन (गीता)
- ✓ भाषा-शिक्षण
- ✓ वैदिक गणित
- ✓ लिपि-शिक्षण
- ✓ वेद
- ✓ पर्यावरण

द्विवर्षीय डिप्लोमा

आयुर्वेद (द्विवर्षीय) शुल्क 10,000/- (प्रति वर्ष)
योग (द्विवर्षीय) शुल्क 6,000/- (प्रति वर्ष)

विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लाभ -

- संस्कृत विषयों के साथ आधुनिक विषयों के अध्ययन का अवसर।
- भारतीय सेना में R.T. (J.C.O) बनने का लाभ।
- शास्त्री करके प्रशासनिक सेवा (I.A.S., I.P.S) आदि की परीक्षा में बैठने का अवसर।
- आयुर्वैदिक चिकित्सा के क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करने का अवसर।
- पत्रकारिता के क्षेत्र में पत्रकार एवं समाचार प्रवाचक बनने का अवसर।
- आचार्य (एम.ए.) के विद्यार्थियों को नेट/जे.आर.एफ. की तैयारी हेतु अतिरिक्त कक्षा की व्यवस्था।

विशेषः- विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए छात्रावास की व्यवस्था उपलब्ध है।
जिनके पास 10+2 या बी.ए. में संस्कृत नहीं थी अथवा कॉमर्स, साईंस आदि विद्यार्थियों को सेतु पाठ्यक्रम (बृजकोर्स/Bridge-Course) द्वारा शास्त्री एवं आचार्य में प्रवेश लेने हेतु विशेष सुविधा।

प्रवेश हेतु नीचे दिए गए पते पर सम्पर्क करें
कार्यालय परिसर - डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, जगदीशपुरा (अम्बाला रोड), कैथल-136027
(कैथल बस स्टैण्ड से अम्बाला रोड पर मात्र 5 कि.मी. दूर)

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करेः-
वैबसाईट - www.mvsu.ac.in
सम्पर्क सूत्र - 93500-45366, 95881-81435

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

"मून्दड़ी (मौनधारा), कपिष्ठल (कैथल)-136027, हरियाणा (हरियाणासरकार के अधिनियम 20/2018 द्वारा संस्थापित)"

व्याख्यानमाला

दिनाङ्कः	मुख्यवक्ता	संचालकः	मंगलाचरणम्	विषय
9/20/2021	डॉ. कृष्णचन्द्रपाण्डेयः	डॉ. नरेशशर्मा	डॉ. अखिलेशकुमारमिश्रः	भारतस्य आत्मा संस्कृतम्
9/21/2021	डॉ. नवीनशर्मा	डॉ. अखिलेशकुमारमिश्रः	डॉ. मदनमोहनतिवारी	वास्तुशास्त्रीय पद्धति एवं रोजगार
9/22/2021	डॉ. विनयगोपालत्रिपाठी	डॉ. रामानन्दमिश्रः	डॉ. नवीनशर्माः	विदेशों में संस्कृत शिक्षण
9/23/2021	डॉ. मदनमोहनतिवारी	डॉ. शर्मिला	डॉ. विनयगोपालत्रिपाठी	वैदिक विज्ञानस्य संक्षिप्तसन्दर्भाः
9/24/2021	डॉ. नरेशशर्मा	डॉ. शीतांशु त्रिपाठी	डॉ. शर्मिला	प्रत्यक्ष एवं वैज्ञानिक है ज्योतिष शास्त्र
9/25/2021	डॉ. (श्री) गिरिराजशर्मा	डॉ. शशिकान्त तिवारी	डॉ. रामानन्दमिश्रः	दैनिक जीवन में योग का महत्त्व
9/26/2021	डॉ. शीतांशु त्रिपाठी	डॉ. विनयगोपालत्रिपाठी	डॉ. शशिकान्त तिवारी	संस्कृत की रोजगारपरकता
9/27/2021	डॉ. अखिलेशकुमारमिश्रः	डॉ. कृष्णचन्द्रपाण्डेयः	डॉ. मदनमोहनतिवारी	वेदों में सन्निहित ज्ञान-विज्ञान की आधुनिक समय में उपयोगिता
9/28/2021	डॉ. शशिकान्त तिवारी	डॉ. मदनमोहनतिवारी	डॉ. नरेशशर्मा	संस्कृत क्यों पढ़ें? कैसे पढ़ें ? क्या पढ़ें ?